Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 4, Issue 1 – 2020
ISSN: 2581-4044

गोदान में व्यक्त नारी चेतना: एक विश्लेषण

डॉ0 प्रभा नन्दा[1]

[1]एम0ए0 हिन्दी, यू0जी0सी0 नेट उत्तीर्ण

प्रेमचंद का युग नारी आंदोलन का युग भी था। उनके साहित्य की शुरूआत ही नारी के उत्पीड़न के विरोध से होती है। उनके उपन्यासों एवं कहानियों में नारी जीवन के विविध पक्षों को उद्घाटित किया गया है। प्रेमा, सेवासदन एवं अन्य रचनाओं में भी नारी जीवन को पर्याप्त महत्त्व दिया गया है। रंगभूमि में इंदु और राजा महेन्द्र प्रताप के संबंधों के बीच तनाव के माध्यम से प्रखर नारी चेतना की अभिव्यक्ति हुई है। गोदान में भी प्रेमचंद ने जगह -जगह पर नारी चेतना को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

गोदान की मूल कथा बेशक होरी-धनिया के संघर्षों और पीड़ाओं की हीं है। परंतु इस मूल कथा के साथ-साथ प्रेमचंद ने अनेक अवांतर कथाओ और प्रकरणों की भी सृष्टि की है, जिसमें नोहरी, झुनिया, सिलिया, चुहिया, मालती, गोविंदी आदि अनेक नारी चरित्र हमारे सामने आते हैं। यदि इस दृष्टि से देखा जाए तो गोदान के कथाकार के सामने दो ही मुख्य प्रश्न उपस्थित हैं-एक किसान के अस्तित्व की रक्षा की चिंता और दूसरी नारीत्च को परिभाषित करने का आधार।

प्रेमचंद ने गोदान में नारी जीवन के हर पहलू को चित्रित किया है। उसके जीवन की प्रत्येक समस्या, उसके जीवन का प्रत्येक पक्ष, उनमें विद्यमान प्रत्येक साहस, त्याग, करूणा, दृढ़ता एवं संयम जैसे उच्च, मानवीय गुणों के साथ-साथ ईर्ष्या, द्वेष, आभूषणप्रियता, रूढ़िवादिता, धर्मभिरूता, अंधविश्वास जैसी दुर्बलताओं को भी चित्रित किया है। नारी जीवन के अंधेरे पक्षों के उद्घाटन को प्रेमचंद केवल स्त्री-पुरूष के व्यक्तिपरक संबंधों तक सीमित नहीं रखते अपितु उसे तत्कालीन राष्ट्रीय जागरण और स्वाधीनता संघर्षों से जोड़कर नया आयाम देते हैं। उनके लिए स्त्री-पुरूष संबंध रूमानी भावनाओं की अभिव्यक्ति का साधन मात्र नहीं है, वे उसे प्रेम कथाओं के वायवीय भावबोध का आधार नहीं बनाते, उसे वे ठोस सामाजिक धरातल देते हैं।

धनिया यदि चट्टान की तरह कठोर है तो मोम की तरह पिघलने वाली भी। वह होरी की सफल जीवन संगिनी है। इसिलिए वह होरी की आवश्यकताओं के प्रति सचेष्ट है। होरी घर से जब बाहर जाता है धनिया यह ध्यान रखती है कि वह भूखे नहीं जाए और उसी प्रकार जब

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

अंतीम क्षण मे होरी टूटने लगता है, धनिया साहस का संबल बन जाती है। इन सब के बावजूद भी उनमें एक नारी चेतना की कमी दृष्टिगत होती है। होरी द्वारा प्रताड़ित होने पर भी केवल यही कहती है-"पापी ने मारते मारते मेरा भुरकस निकाल दिया, फिर भी उसका जी नहीं भरा।"[1] फिर भी जब होरी को ज्वर आया तो धनिया का ममत्व जाग उठा -लाख बुरा हो, पर उसी के साथ जीवन के पच्चीस साल कटे हैं, सुख किया है तो उसी के साथ, दुख भोगा हो तो उसी के साथ। अब तो चाहे वह अच्छा है या बुरा अपना है।[2] धनिया अपने परिवार के प्रति कर्त्तव्यशील है। वह प्रतिक्षण पारिवारिक निर्माण में तल्लीन है। उसका विद्रोह भी सामाजिक निर्माण का हेतु है।[3] जब वह कहती है-"मैं कह देती हू अगर गाय घर से बाहर निकली तो अनर्थ हो जाएगा। रख लिए हमने रूपये, दबा लिए, बीच खेत दबा लिए, डंके के चोट पर कहती हूँ।[4] "उसके यह कथन में एक चुनौती भरी ललकार है, इसलिए वह कहती है, मैं सब को पहचानती हूँ, एक एक की नस पहचानती हूँ। होरी दरोगा का सत्कार करता है, धनिया उसे चुनोती देती है आर जहाँ कहीं भी होरी जीवन में समझौता चाहता है धनिया वहाँ विरोध चाहती है। इसलिए श्री जगदीश पांडेय जी कहते हैं-'' धनिया में पुरूष तत्व की प्रकट प्रधानता हैं। कोमल नारी-तत्व तो विनोद की क्षणिक सरलता एवं अश्रु पुलक के क्षणों में गूढ़ स्त्रोत के रूप में हीं फूटता है, और इसीलिए बाह्य और आभ्यन्तर का वैषम्य देखने को मिलता है।[5]

प्रेमचंद ने गोदान में किसान परिवारों की एक विशेषता का वर्णन किया है। विशेषतः दलित किसानों में पति-पत्नी के बीच का मारपीट का वर्णन। मध्यवर्गीय जीवन में इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। यदि वहाँ मारपीट हो जाए तो विवाह विच्छेद निश्चत है, क्योंकि मध्यवर्गीय स्त्री अपने अस्तित्वबोध के प्रति सचेत है। जैसा कि राय सहाब की पुत्री एवं दमाद के बीच हुआ। हीरा-पुनिया के बीच भी मारपीट हुई। प्रेमचंद ने उसका भी वर्णन किया है। हीरा बहु अपने घर की मालकीन थी। उसी के विद्रोह से भाइयों मे अलगौझा हुआ था। धनिया को परास्त करके शेर हो गई थी। हीरा कभी-कभी उसे पीटता था। अभी हाल में इतना मारा था कि वह कई दिन तक खाट से न उठ सकी, लेकिन अपना अधिकार वह किसी तरह न छोड़ती थी।[6] गोबर-झुनिया के बीच में भी झगरा हुआ, यहाँ तक की सीधा सादा गमखोर होरी भी धनिया को पीटने लग जाता है। इस मारपीट और झगड़े के बाद कई दिनो तक अबोला रह जाता है। यह अबोला किसी प्राकृतिक विपदा या संकट के समय समाप्त हो जाता है तथा वह दांपत्य -जीवन पुनः अपनी गति पकड़ लेता है।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

गोदान के किसान दामपत्यों के बीच के संघर्ष पारिवारिक विघटन तक न पहुँचने का कारण वही नहीं है, जो प्रेमचंद सोच रहे थे। साहचर्य जन प्रेम अथवा एक दूसरे के प्रति त्याग की भावना जैसी आदर्शवादी स्थिति के होने का आभास पैदा किया गया है। वस्तुतः यहाँ इन स्त्रियों मे नारी चेतना की कमी परिलक्षित होती है। 'पति-पत्नी में झगड़े तो होंगे हीं' या 'यह हमारा आपस का झगड़ा है', 'लाख बुरा हो पर उसी के साथ जीवन के पच्चीस साल कटे हैं ' जैसे सांत्वना भरे शब्दों से ये नारी पात्र अपने आप को रिझाते हुए दिखते हैं। दामपत्य जीवन के फीर से उसी गति से चल पड़ने पर प्रेमचंद काफी संतुष्ट दिखते हैं। लेकिन गोदान के गावों की नारी अधिकार ही व पुरूषों के अधीन है, परिवार द्वार लिए गए किसी निर्णय में उसकी सहभागिता नहीं है। अशिक्षित होने के कारण अपने अस्तित्व के प्रति सजग नहीं है। यही कारण है कि ग्रामीण स्त्री अवहेलना, अपमान और उत्पीड़न को चुपचाप सहने के लिए बाध्य है।

मतादीन सिलिया के यौन-शोषण को सवर्णों का अधिकार मानता। सिलिया इस शोषण को चुपचाप सहती चली जाती है, उसमें विद्रोह की कोई कुलबुलाहट नजर नहीं आती। अब भी उसमें मातादीन के लिए स्नेह ही है। ''उसका धर्म लेकर तुम्हें क्या मिला ? अब वह भी मुझे न पूछेगा। लेकिन पूछे न पूछे, रहूँगी तो उसी के साथ। वह मुझे चाहे भुखों रखे, चाहे मार डाले, पर उसका साथ न छोड़ँगी।'' अपमानित होकर भी मातादीन का साथ न छोड़ने का दृढ़ निश्चय और परिवान जनों से दूर होने का कोई गम न होना, सिलिया के भीतर अस्तित्व और अस्मिता के प्रति सचेतनता की कमी को दर्शाता है।

प्रेमचंद ने जिस समय गोदान की रचना की उस समय जीवन के अन्य क्षेत्रों के भाँति नारियों में जागरूकता उत्पन्न हो रही थी और उनकी शिक्षा के प्रति अभिभावकों में उदासीनता समाप्त हो रही थी। मालती इसी जागरूक नारी-वर्ग की प्रतिनिधि के रूप मे प्रस्तुत की गई है। आरंभ से ही प्रेमचंद और आधुनिकता, भारतीय नारी के आदर्श के रूप मे चित्रित करना चाहते थे। मेहता जैसा विचारशील पुरूष उसी को अपना आदर्श मानता है। परंतु उपन्यास के विकास क्रम में वह इस आदर्श की रक्षा नहीं कर पाती तथा मालती के प्रति लेखक के दृष्टिकोण में लगातार परिवर्तन होता रहता है। कथा के विकास-क्रम मे वे थोड़ी-देर बाद ही लिखते हैं, 'मालती बाहर से तितली है भीतर से मधुमक्खी। उपन्यास का अंत होते-होते मेहता भी मालती के भक्त हो जाते हैं और लेखक उसी का आदर्शीकरण करने लग जाता है। मालती केवल रमणी नहीं है, माता है और ऐसी -वैसी माता नहीं, सच्चे अर्थ में देवी और माता और

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

माता और जीवन देने वाली, जो पराए बालक को भी अपना समझ सकती हैं, जैसे उसने मातापन का सदैव संचय किया हो और आज दोनों हाथों से उसे लुटा रहीं है।[7]

मालती अविवाहित है। उपन्यास के अंत में भी वह अपने इसी निश्चय पर कायम है कि मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरूष बनकर रहने से कहीं सुखकर है।[8] और तो और मालती को सारे शहर में बदनाम करने वाली गोविंदी भी ऐक दिन सोचती है-बहुत अच्छा करती है, जो ब्याह नहीं करती। अभी सब उसके गुलाम हैं। तब वह एक की लौंडी होकर रह जाएगी। बहुत अच्छा कर रही है। समाज में दो-चार ऐसी स्त्रियाँ बनी रहें, तो अच्छा, पुरूषों के कान तो गर्म करती रहें।[9]

प्रेमचंद का नारी विषयक दृष्टिकोण प्रगतिशील है। वे कुछ अंतर्विरांधों के बावजूद स्त्री-पुरूष के समान अधिकारों एवं स्त्री के हर तरह के शोषण का विरोध करते हैं। प्रेमचंद स्त्री-पुरूष संबंधों के वैयक्यिक धरातल पर हीं नहीं प्रस्तुत करते अपितु समष्टिगत दृष्टि के अनुसार वे समस्त समस्याओं को राष्ट्रीय जागरण एवं स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में चित्रित करते हैं। प्रेमचंद साहित्य का इस दृष्टि से आज भी महत्त्व है कि नारी जीवन के संदर्भ में जिन सवालों को प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से अठाया था उनमें से कई अब भी अनुत्तरित है।

संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद गोदान, पृ0-92.
2. वही, पृ0-99.
3. रामविनोद सिंह एवं दिनेश प्रसाद सिंह-गोदान: पुनर्मूल्यांकन के बाद, पृ0-129.
4. प्रेमचंद-गोदान, पृ0-38.
5. जगदीश पांडेय-शील-निरूपण: सिद्धांत और विनियोग, पृ0-129.
6. प्रेमचंद-गोदान, पृ0-27.
7. वही, पृ0-280.
8. वही, पृ-283.
9. वही, पृ0-161.

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.